देवमवर्डतां। बृहत्या छन्दसेन्द्रियं। श्रीचिमन्द्रे वयोद-धत्। वसुवने वसुधयस्य वीतां यज ॥ २॥

देवी जजाह ती देविमन्द्रं वयाधसं। देवी देवमव-र्बतां। पङ्त्या छन्दंसेन्द्रियं। शुक्रिमिन्द्रे वयाद्धत्। वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज । देवा देवा होतारा देविमिन्द्रं वयोधसं। देवा देवमवर्द्धतां। चिष्टभा छन्द-सेन्द्रियं। त्विषिमिन्द्रे वयोद्धत्। वसुवने वसुधयस्य वीतां यज ॥ ३॥

देवीस्तिस्तिस्रो देवीर्वयोधसं। पतिमिन्द्रमवर्ड-यन्। जगत्या छन्दसेन्द्रियं। बल्सिन्द्रे वयोद्धत्। वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यज । देवा नर्। श्रमा दे-विमन्द्रं वयाधमं। देवा देवमवर्डयत्। विराजा छन्द-सिन्द्रयं। रेतद्रन्द्रे वयोद्धत्। वसुवने वसुधयस्य वेतु यजं॥ ४॥

देवा वनस्पतिद्विमिन्द्रं वयोधसं। देवा देवमवर्ड-यत्। दिपद् छन्दसेन्द्रयं। भगमिन्द्रे वयोद्धत्। व-सुवने वसुधेयस्य वेतु यज। देवं बर्ह्विशितीनां देव-मिन्दं वयोधसं। देवं देवमवर्डयत्। ककुभा छन्दसं-न्द्रियं। यशदन्द्रे वयाद्धत्। वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज्ञ॥